प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 24 *AUG 2009 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01 AUG	35	⊕	⊕	⊕	पाँच भ्रान्तियाँ १.भेद - बिम्ब प्रतिबिम्ब २.कर्तृत्व-भोक्तृत्व - मणि लालफूल ३.संग - घटाकाश महाकाश	8
2	02 AUG	35	⊕	⊕	⊕	अपना स्वरूप सच्चिदानंद - अपनी आत्मा सर्वोप्रिय है, सारा जगत मेरा ही रूप है, सत्-असत् दानों मैं ही हूँ	
3	03 AUG	45	⊕	⊕	⊕	पाँच भ्रान्तियाँ ४. विकारित्व - रज्जु सर्प ५. कार्यणात् भिन्न जगत+सत्य - स्वर्णाभूषण	9
4	04 AUG	33	⊕			गीता - २/१६, सत्-असत् निरूपण	1
5	05 AUG	42	⊕	⊕	⊕	सरस्वती रहस्योपनिषद - जगत के पाँच अंश ⊕ इति	3
6	06 AUG	29	⊕	⊕	⊕	गीता - २/१६, सत्-असत् निरूपण	2
7	07 AUG	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
8	08 AUG	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
9	09 AUG	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
10	10 AUG	33	⊕			गीता - २/१६,१७ सत्-असत् निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	3
11	11 AUG	30	⊕			अथर्व वेद - मुण्डकोपनिषद, परा-अपरा विद्या, ईश्वर जगत का निमित्तोपादान कारण	A
12	12 AUG	30	⊕			गीता - २/१६,१७ सत्-असत् निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	4
13	13 AUG	19	⊕			अथर्व वेद - मुण्डकोपनिषद, बह्म सत्, माया असत्, जीव-ईश्वर-माया-जगत निरू०	B
14	14 AUG	33	⊕	⊕		गीता - २/१६-२० सत्-असत् निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	5
15	15 AUG	52	⊕	⊕		अथर्व वेद मुण्डकोपनिषद, पराविद्या-कारण ब्र०/मायोपाधिक ब्र०,अपराविद्या-कार्य ब्र०	C
16	16 AUG	31	⊕			गीता - २/२०-२३ सत्-असत् निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	6
17	17 AUG	39	⊕	⊕	⊕	अ०वेद-मु०उ०,पराविद्या-कारण ब्र०,अपराविद्या-कार्य ब्र०-ईश्वर अभिन्न निमित्तोपादान कारण	D
18	18 AUG	30	⊕	⊕		गीता - २/२३-२५ आत्मा का स्वरूप निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	7
19	19 AUG	34	⊕	⊕		अ०वेद-मु०उ०,द्वि०खण्ड, कर्मकाण्ड निंदा, भक्ति प्रशंसा, गुरु शरणागति व ज्ञानोपदेश याचना	E
20	20 AUG	31	⊕	⊕		गीता - २/२३-२८ आत्मा एवं माया का स्वरूप निरूपण, अपना स्वरूप जानते हुए दे०इ०म०बु० से कर्म करो	8
21	21 AUG	29	⊕	⊕	⊕	अ०वेद-मु०उ०,अग्नि से चिंगारियों के सदृश जगत उत्पत्ति, आत्मा का स्वरूप निरूपण	F
22	22 AUG	44	⊕			कृष्ण यजुर्वेद शारीरकोपनिषद, पंचभूतों से शरीर रचना का वर्णन	1
23	23 AUG	33	⊕			गीता - २/२७, आत्मा का स्वरूप निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया	9
24	24 AUG	30	⊕			कृष्ण यजुर्वेद शारीरकोपनिषद, त्रिगुणात्मिका प्रकृति से शरीर रचना वर्णन, सत्व गुण से दैवीय सम्पदा	2
25	25 AUG	33	⊕	⊕		गीता - २/२८-२६, आत्मा का स्वरूप निरूपण - सच्चिदानंद एवं माया एवं रास लीला	10
26	26 AUG	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
27	27 AUG	27				कृष्ण यजुर्वेद शारीरकोपनिषद, शारीरकोपनिषद इति ⊕	3
28	28 AUG	35	⊕	⊕	⊕	गीता - २/३०, नि० नि० सच्चिदानंद स्वरूप निरूपण, जगत-स० सा० स्वरूप माया-मिथ्या है	11
29	29 AUG	29	⊕			गीता - २/३०, जगत-शरीर-दृश्य माया, दृष्टा-ब्रह्म । पंचभूतों से स्थू० व सू० शरीर रचना	12
30	30 AUG	59				सामवेद छा०उ० ७वाँ अ०- नारद सनतकुमार सम्वाद - ज्ञानोपदेश	a
31	31 AUG	35	⊕	⊕		गीता - २/३०, पंचभूतों से तीनों शरीर रचना, व्यष्टि-समष्टि श०, क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, दृग-दृश्य निरूपण	13
32	32 AUG	46				सामवेद छा०उ० ७वाँ अ०- नारद सनतकुमार सम्वाद - ज्ञानोपदेश	b
33	33 AUG	34	⊕	⊕		गीता - २/३०, देह-देही, दृग-दृश्य, जगत-जीवात्मा निरूपण, देह 'दुःख' व देही 'सुख' स्वरूप है	14
34	34 AUG	53	⊕	⊕	⊕	जीव के ३ प्रतिबन्ध - भूत वर्तमान भविष्य - निवारण के उपाय, सद्य एवं विदेह मुक्ति	⊕
35	35 AUG	30	⊕			गीता - २/३०, देह-देही, दृग-दृश्य विवेक, सभी देहों में एक ही देही, सभी देह माया-मिथ्या हैं	15
36	36 AUG	29				गीता - १५/१ ईश्वर जगत रूपी वृक्ष का मूल है । गुरु परम्परा का निरूपण ।	A
37	37 AUG	32	⊕	⊕	⊕	प्रेय सुख आत्म सुख है, श्रेय सुख विषयों का आभास सुख है ।	⊕
38	38 AUG	41	⊕	⊕	⊕	गीता - १५/१-४ जगत रूपी वृक्ष का ईश्वर मूल है, ब्रह्म माया ईश्वर जगत जीव निरूपण Imp	B